शिव से मिलन ....! -ब्र.कु.सूर्य

शिवरात्रि तो तुम युगों से मनाते आये....। आखिर उससे मिलोगे कब.....? यह आवाज़ उठी मनोहर के अन्तर्मन से, जोकि 20 वर्ष से शिव की सच्चे दिल से आराधना कर रहा था। उसके मन में मिलन की प्यास थी, भक्ति से मन उबने लगा था। स्वयं में संशय उठने लगा था कि कहीं ये भक्ति निष्फल तो नहीं...। उसका चित्त स्वत: ही चिन्तन की गहराई में उतर गया। वह सोचने लगा कि 20 शिवरात्रियों पर मैंने सारी-सारी रात जागकर शिव के दीदार का इंतज़ार किया, उसका सच्चे दिल से आह्वान किया। क्यों कर रहे हैं हम यह सब कुछ? क्या शिव आते हैं....? क्या वे हमें नहीं दिखते, क्या हमारा मन इतना शुद्ध नहीं कि वे हमें मिलें...क्या वो दिन भी कभी आयेगा जब

हम अपने ईष्टदेव शिव को साक्षात् अपने सामने खड़ा देखेंगे...और उनका वरदानी हस्त हमारी ओर होगा?

बड़ा आनन्दित हुआ मनोहर का मन। वह सोचने लगा कि जिसके आह्वान और चिन्तन में ही इतना सुख है, यदि वह सम्मुख आ जायें तो क्या होगा! उसके भाग्य ने साथ दिया। उसे निमन्त्रण मिला उसके ही एक मित्र से। निमन्त्रण था ब्रह्माकुमारियों की ओर से शिवरात्रि के कार्यक्रम में आने का। मनोहर वहां गया और उसे शिव मिलन का सरल मार्ग मिल गया। उसकी भक्ति पूर्ण हो गई। उसने जान लिया...कि शिव तो उसके परमप्रीय परमपिता हैं। वह शंकर नहीं, सूक्ष्म अति सूक्ष्म ज्योति स्वरूप हैं, शिवलिंग उन्हीं की साकार प्रतिमा है। वह सच्चा पिता है। भला यह कैसे हो सकता है कि एक पिता अपने बच्चों से कभी मिले ही नहीं।

कब आते हैं शिव भोलेनाथ बाबा

शिवरात्रि शिव के अवतरण की यादगार है। शिव पूर्व कल्प में आये थे। वे अज्ञान अंधकार के समय आये थे, वे विकारों की काली रात्रि में आये थे...उन्होंने अज्ञान की नींद में सोये मनुष्यों को जगाकर उन्हें नव प्रकाश, नवजीवन प्रदान किया था। वे पुन: आयेंगे...क्या सचमुच आयेंगे...क्या भक्त उन्हें पहचानेंगे या वे भक्ति करना ही अपना कर्त्तव्य मानते हैं?

शिव आते हैं कलियुग के अन्त में, जब भक्त उन्हें ढूंढ़-ढूंढ़ कर थक जाते हैं, जब रूहों की करुण पुकार उसे आने के लिए बाध्य कर देती है, जब सभी आत्माओं के वापस जाने का समय आ जाता है। और वही समय आ गया है। इस सदी के अन्त के साथ-साथ कल्प के भी अन्त का समय समीप आ रहा है। शिव अपने प्यारे बच्चों से मिल रहे हैं, अनेक वर्षों से मिल रहे हैं। सब भक्तों को भक्ति का फल दे रहे हैं। हम उनके सभी भक्तों का आह्वान करते हैं कि आओ....जल्दी-जल्दी आओ...जिनका तुमने जन्म-जन्म आह्वान किया, वह अब तुम्हारा आह्वान कर रहा है। उससे अपना अधिकार ले लो।

कौन हैं शिव

शिव वह जटाधारी, सर्पधारी, चन्द्रधारी व गंगाधारी शंकर नहीं बल्कि उनके भी रचयिता ज्योतिर्बिन्दु निराकार हैं। 'शिव' का एक शाब्दिक अर्थ 'बिन्दु' भी है। बिन्दु अर्थात अति सूक्ष्म...। जो अति सूक्ष्म है, वही सर्वशक्तिवान भी है। उसी में सम्पूर्ण ज्ञान भी समाया हुआ है। वे इस विश्व का कल्याण करते हैं। वे स्वयं इस धरा पर प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से कर्म करते हैं...वे अकर्ता नहीं, परन्तु उनके कर्म दिव्य हैं। यदि वे कुछ भी न करते तो उनका अस्तित्व ही क्या होता, उनका महत्व ही क्या होता, उन्हें कोई क्यों पुकारता, उनकी महिमा ही क्यों होती? किसी की भी महिमा उसके कर्तव्य के आधार पर ही होती है।

'शिव' का एक शाब्दिक अर्थ 'बिन्दु' भी है। बिन्दु अर्थात अति सूक्ष्म...। जो अति सूक्ष्म है, वही सर्वशक्तिवान भी है। उसी में सम्पूर्ण ज्ञान भी समाया हुआ है। वे इस विश्व का कल्याण करते हैं। वे स्वयं इस धरा पर प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से कर्म करते हैं...वे अकर्ता नहीं, परन्तु उनके कर्म दिव्य हैं। यदि वे कुछ भी न करते तो उनका अस्तित्व ही क्या होता, उनका महत्व ही क्या होता, उन्हें कोई क्यों पुकारता, उनकी महिमा ही क्यों होती? किसी की भी महिमा उसके कर्तव्य के आधार पर ही होती है।

क्या हैं उनके दिव्य कर्तव्य

कर्तव्य तो मनुष्य भी करते हैं, महान पुरुष भी करते हैं और देवता भी करते हैं, परंतु भगवान जो दिव्य कर्तव्य करते हैं, ऐसा अन्य कोई नहीं कर सकता।

उनके दिव्य कर्तव्य, न केवल स्थापना, पालना और विनाश हैं बल्कि वे आकर सभी को सम्पूर्ण ज्ञान देते हैं, मन का अंधकार हरते हैं। विकारों और पाप कर्मों पर विजय पाने के लिए राजयोग सिखाते हैं और आकर सभी को सम्पूर्ण पावन बनाकर वापस मुक्तिधाम ले जाते हैं।

इतना ही नहीं शिव भोलानाथ बाबा यहां आकर शक्तियों को साथ लेकर इस धरा पर स्वर्ग की स्थापना कर देते हैं। मनुष्यात्माओं को अपनी शक्तियाँ देकर वे उन्हें शिव-शक्तियाँ बना देते हैं, वे उनके द्वारा विश्व परिवर्तन का महान कार्य कराते हैं।

वे आत्माओं के परमपिता हैं और प्यार के सागर हैं। वे आकर अपने बच्चों को निर्मल प्यार देते हैं। इस प्यार में मग्न होकर आत्माएं योग-युक्त हो जाती हैं और इसी प्यार के वश वे विषय-विकारों, व्यसनों का त्याग कर स्वयं को शिव पर बलिहार कर देती हैं। शिव स्वयं सद्गुरु बनकर सबको कल्याण का मार्ग बताते हैं। दु:खी आत्माओं को ज्ञान शक्ति देकर सुखी बनाते हैं। उनका मिलन ही अति आनन्दकारी है। उनके कर्मों को दिव्य केवल इसलिए नहीं कहा जाता कि ये कार्य उनके सिवाय अन्य कोई नहीं कर सकता बल्कि कर्म करते भी वे कर्म के बन्धन में नहीं आते। अर्थात् वे प्रकृति को अधीन रखते हैं। जबकि मनुष्यात्माएं इस देह रूपी प्रकृति के अधीन हो जाती हैं और कर्म के भी वश हो जाती हैं।

सच्ची शिवरात्रि चल रही है

हम शिवरात्रि के स्थान पर सदा ही शिव जयन्ती शब्द का प्रयोग करते हैं। शिव आये थे, व पुन: आये हैं और वही दिव्य कर्म पुन: कर रहे हैं। 77 वर्ष पूर्ण हो गए, शिव को इस धरा पर ज्ञान गंगा बहाते, अनेक आत्माओं के पाप मिटाते। उन्होंने एक शक्तिशाली अलौकिक सेना (शिव-शक्तियाँ) तैयार कर दी है जो आने वाले थोड़े ही वर्षों में इस सृष्टि का काया कल्प कर देगी।

अब तक तो मन्दिरों में 'शिवरात्रि'मनाई गई। अब स्वयं इस कलियुग की रात्रि में, शिव यहां उपस्थित हैं और इस सारे विश्व को मन्दिर बनाने का कार्य कर रहे हैं। जो भक्त अपनी भक्ति का फल चाहते हैं, जो भक्त ईश्वरीय मिलन का सुख चाहते हैं, वे आयें और शिवरात्रि पर शिव से मिलन मनाएं। यही इस शिवरात्रि की सच्ची बधाई होगी।

आह्वान

प्रसन्न हुआ है शिव भोलानाथ बाबा। भक्त शिव को प्रसन्न करने के लिए सच्चे मन से भक्ति करते आये...अब भगवान शिव भोलानाथ भक्तों की पुकार सुनकर प्रसन्न हुआ है और प्रसन्न होकर वरदान दे रहे हैं। अनेक रूहें उनसे वरदान प्राप्त कर धन्य-धन्य हो चुकी हैं। अपको भी यदि वरदान लेना हो तो शिव स्वयं अति प्यार से आपको बुला रहे हैं...मेरे मीठे लाडले बच्चों! जल्दी-जल्दी मेरे पास आ जाओ।

दिल्ली-नांगलोई। ''व्यापार बढ़े कैसे-तनाव घटे कैसे'' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए पूर्व निगम पार्षद नरेन्द्र बिन्दल, उद्योगपति नरेश ऐरण, ब्र.कु. पीयूष, ब्र.कु. अंजली, ब्र.कु. आदेश, ब्र.कु. शोभा एवं ब्र.कु. सुरेन्द्र।

फैजपुर-महा.। पुण्यतिथि महोत्सव के अन्तर्गत परमात्मा का संदेश देते हुए ब्र.कु. शकुंतला।

मऊ-उ.प्र.। आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचन के कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए सांसद दारा सिंह चौहान, डॉ. कंचन राय तथा ब्र.कु. विमला।

दुर्गापुर-अमरावती। "विचलित मन पर कन्ट्रोल करने से शरीर स्वस्थ और जीवन तनाव मुक्त" कार्यक्रम के पश्चात् ब्र.कु.ज्ञानेश्वर,ग्लोबल हॉस्पिटल माउण्ट आबू, बस डिपो मैनेजर रघुवीर गंगाधर, वरिष्ठ पत्रकार लक्ष्मण जाधव, वरिष्ठ चालक उमेश कराड एवं ब्र.कु.गजानन्द राव कराड समूह चित्र में।

अकलेरा-राज.। विधायक कुँवर लाल मीणा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सोनिया तथा ब्र.कु.सुशीला।

चमराजनगर-कर्नाटक। भारत स्वाभिमान ट्रस्ट द्वारा आयोजित योगदीक्षा कार्यक्रम में योगा गुरु रामदेव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रमा।